Vol.1, Issue: 1 December: 2012 **ISSN: 2320-091X**

International Journal for Research in Education (IJRE)
Refereed, (Reviewed) & Indexed International Journal

Hkkjr ds xkjoi.k vrhr ds egku nk'kfud&egkRek xk/kh] Jh vjfoUn ,o Jh johUnukFk Bkdqj

Mk. pUnuk M
रीडर, बी.एड. विभाग
नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ

अनेक दार्शनिकों ने भारत के अतीत का गोरव बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। इनमें महात्मा गांधी, श्री अरविन्द घोष एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर के नाम उल्लेखनीय हैं।

egkRek xk/kh

गाँधी जी ने उन महान शिक्षकों तथा उपदेशकों की मण्डली में अनोखा स्थान प्राप्त किया है जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र को नई ज्योति प्रदान की है।

> ''ग्रीन का कथन था कि पेस्टालॉजी वर्तमान शिक्षा सिद्धान्त तथा व्यवहार के प्रारम्भिक बिन्दु थे। यह बात पाश्चात्य शिक्षा के क्षेत्र में सत्य हो सकती है। गाँधी जी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का निष्पक्ष अध्ययन इस बात को सिद्ध करता है कि वे पूरब में शिक्षा सिद्धान्त और व्यवहार के प्रारम्भिक बिन्दु है।''
>
> एम. एस. पटेल

> "Green remarked that Pestalozzi was the starting point of the modern educational theory and practice. This may be true so far as Western Education is concerned. An impartial study of Gandhiji's educational teachings will reveal that he is the starting point of modern educational theory and practice in the East". M.S. Patel

thou n'ku

b'oj e vVy fo'okl& उनके अनुसार जिस प्रकार सूर्य की किरणें अनगिनत हैं, परन्तु उनका स्रोत एक ही है, इसी प्रकार इस संसार में विभिन्नता के होते हुये भी इसका रचीयता एक ही है।

मानव सेवा को ही वह अपना धर्म मानते थे, सत्य–ईश्वर प्राप्ति का साधन है तथा गाँधी जी ने इसे सर्वश्रेष्ट सिद्धान्त माना है।

vfgalk& सत्य का पालन केवल अहिंसा द्वारा ही सम्भव है। गाँधी जी के अनुसार अहिंसा को दो मुख्य तत्व हैं– निर्भयता तथा सत्याग्रह।

''निर्भयता का अर्थ है समस्त बाह्म भयों से मुक्ति .... अनुचित कार्य करने का भय इत्यादि।'' महात्मा गाँधी

"Fearlessness connotes freedom from all external fears …. causing offence and so on". Mahatma Gandhi

सत्याग्रह से उनका तात्पर्य था सत्यबल का दृढ़ अवलम्बन। विरोधी को कष्ट पहुँचाकर नहीं अपितु स्वयं कष्ट सहकर सत्य का सर्मथन।

f'k{kk dk vFk

''शिक्षा साक्षरता नहीं है।'' महात्मा गाँधी

"Literacy is not the end of education, not even the beginning."
Mahatama Gandhi

''शिक्षा से मेरा तात्पर्य है, बालक और मनुष्य के शरीर मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुँमुखी विकास है।''

महात्मा गाँधी

"By education I mean an all round drawing of the best in child, man, body, mind and spirit." Mahatma Gandhi

f'k{kk ds mÌs';

0;kogkfjd mÌs'; **(Vocational Aim)**

गाँधीजी के शैक्षिक विचार का उदगम अफ्रीका में Tolstoy Farm पर हुआ था।

''प्रत्येक व्यक्ति को जीवित रहने के लिए कठोर परिश्रम करना चाहिए। यह नियम मुझे Tolstoy के लेख Bread Labour से मिला''। गाँधीजी

गाँधीजी के अनुसार शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बालक की व्यवसाय सम्बन्धी समस्याओं को हल करना है।

lkLd`frd mnns'; **(Cultural Aim)**

''मैं शिक्षा के सांस्कृतिक पक्ष को उसके साहित्यिक पक्ष से अधिक महत्वपूर्ण समझता हूं ....। आन्तरिक संस्कृति की छाया आपकी वाणी पर पड़नी चाहिये।'' महात्मा गांधी, कस्तूरबा बालिका

आश्रम नई दिल्ली, की बालिकाओं को सम्बोधित करते हुये।

uSfrd o pkfj=d fodkl

''मैंने सदैव हृदय की संस्कृति अथवा चरित्र निर्माण को प्रथम स्थान दिया है......।''

गांधीजी

"I had always given the first place to the culture of the heart or building of character."

Lkkekftd ,o o;fDrd mÌs';k e leuo;&

गांधीजी के अनुसार, सम्पूर्ण समाज के हित के लिये अपनी इच्छा से सामाजिक नियन्त्रण को स्वीकार करने से व्यक्ति तथा समाज, जिसका वह सदस्य है, दोनों का विकास होता है।

f'k{kk dk LokPp mnns';

गांधीजी के अनुसार ईश्वर की अनुभूति ही शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य होना चाहिये। यह चरित्र निर्माण द्वारा ही सम्भव है।

f'k{kk dk ikB;Øe

गांधीजी ने अपने शैक्षिक विचारों को 1932 में यर्वदा जेल में लिखा व 22–23 अक्तूबर 1937 में वर्धा में एक सम्मेलन में प्रकट किया।

बालक की शिक्षा के प्रथम स्तर में उसे इच्छानुसार कार्य करने की अनुमति हो। गांधीजी का विचार था कि बालक प्रत्येक क्रिया से सम्बन्धित क्यों और कहाँ के लिए प्रश्नों का उत्तर जाने। इस स्तर पर उसे रेखायें खींचना, चित्रों के माध्यम से पढ़ना तथा समस्त शिक्षण कार्य खेल विधि द्वारा सिखाना होना चाहिये।

f}rh; Lrj ¼8&16 o"kZ½& इस स्तर पर बालक को हस्तकार्य सिखाने का प्रस्ताव भी गांधीजी ने रखा, आवश्यकतानुसार सामान्य व्यावसायिक शिक्षा तथा साहित्यिक विषय की शिक्षा का भी प्रावधान होना चाहिए।

r`rh; Lrj ¼16&25½– शिक्षा का माध्यम मात्रभाषा हो तथा साथ ही इतिहास, भूगोल, जीव–विज्ञान, गणित आदि विषयों का ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिये।

महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों के आधार पर डॉ0 ज़ाकिर हुसैन के सभापतित्व में एक समीति ने बुनियादी शिक्षा की योजना तैयार की।

cqfu;knh f'k{kk dk ikB;Øe

बुनियादी दस्तकारी– विद्यालयों में कताई–बुनाई, बढ़ईगीरी, खेती, फल व सब्ज़ी उगाना, चमडे का कार्य, आदि कोई भी एक दस्तकारी चुनी जा सकती है। इस प्रकार की शिक्षा से विद्यार्थी को व्यावसाय के चुनाव में सहायता मिलेगी।

मातृभाषा– इस योजना के अन्तर्गत मातृभषा के अध्ययन को विशेष महत्व दिया गया।

xf.kr dh f'k{kk

गणित की शिक्षा केवल कक्षा में अंकों के शिक्षण तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिये अपितु व्यवहारिक जीवन के प्रश्नों से सम्बन्धित होनी चाहिए।

lkekftd f'k{kk& के शिक्षण द्वारा भारत तथा सम्पूर्ण मानव जाति की प्रगति हेतु छात्रों में रूचि उत्पन्न करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

bfrgkl& भारत के इतिहास की सरल रूप–रेखा होना छात्रों के समक्ष प्रस्तुत की जानी चाहिए।

Hkwxksy f'k{k.k& के अन्तर्गत भौगोलिक परिस्थिति का ज्ञान प्रत्यक्ष चित्रण व उदाहरणों द्वारा दिया जा सकता है।

foKku& वैज्ञानिक प्रयोगों व सिद्धान्तों को स्थानीय सन्दर्भ में देखना ही विज्ञान की शिक्षा का लक्ष्य हो।

fp= dyk& शिक्षण द्वारा छात्रों में मॉडल बनाने की योग्यता का विकास होना चाहिए।

fgUnh Hkk"kk& सभी छात्रों के लिये हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य हो।

/kkfeZd f'k{kk& गांधी जी का विचार है कि सभी धर्मों में नैतिकता का सिद्धान्त एक समान है। इन सिद्धान्तों की शिक्षा छात्रों को अवश्य दी जानी चाहिये।

ग्रीष्मालकाश के समय ग्रामीण जनता को छात्रों द्वारा प्रशिक्षण दिये जाने का सुझााव भी गांधी जी द्वारा दिया गया।

f'k{k.k fof/k
गांधीजी ऐसी शिक्षण पद्धति को महत्व देते थे जिसमें विचार, कर्म तथा वाचन द्वारा छात्र को सीखने के अवसर दिये जायें।

vuq'kklu& गांधीजी ने आत्म–अनुशासन पर बल दिया। उनका यह भी सुझाव था कि बालक को विद्यालय की क्रियाओं में व्यस्त रख कर भी अनुशासनहीनंता की समस्या का समाधान संभव है।

गांधीजी के शैक्षिक विचारों में आदर्शवाद, मानवतावाद, प्रकृतिवाद, तथा यथार्थवाद की स्पष्ट छाप दिखाई देती है।

vkn'kZokn dk xk/kh th ij izHkko
मानव जीवन का उद्देश्य ईश्वर की प्राप्ति होना चाहिए तथा अहिंसा सत्य आत्म अनुशासन सम्बन्धी विचारों से गांधी जी पर आदर्शवाद की स्पष्ट छाप दिखाई देती है।

ekuorkoknh fopkj
मानव शक्ति में उनका अटूट विश्वास था। वह ऐसे गांवों की स्थापना करना चाहते थे जो पुर्णतः आत्म निर्भर हा।

;FkkFkZokn& की छाप भी गांधीजी के विचारों में दिखाई देती है। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास होना चाहिए बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम छात्रों को पूर्ण रूप से आत्म निर्भर बनाने का प्रयास है।

i`dfrokn Johannesburg से 21 मील दूर स्थित 'Tolstoy Form' पर उनका प्रयोग प्रकृतिवादी दृष्टिकोण का प्रतीक है।

गांधी जी सर्वोदय दर्शन से प्रभावित हुए। वह प्रत्येक व्यक्ति तथा गांवों का सर्वागीण विकास चाहते थे। इस प्रकार इन ईकाइयों के विकास द्वारा राष्ट्र का विकास भी सम्भव होगा।

1945 ई0 में हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की बैठक में 'बेसिक अथवा बुनियादी शिक्षा का नाम 'नई तालीम' रखा गया।

1947 ई0 में हिन्दुस्तानी तालीमी संघ ने बेसिक शिक्षा की विस्तृत पाठयोजना का निर्माण किया भारत सरकार ने एक 'बेसिक शिक्षा की स्थायी समिति' भी स्थापित की।

भारत की दार्शनिक परंपरा की अद्वैतवादी प्रवृति के अनुसार गांधीजी ने अनेकता में एकता की उपलब्धि का प्रयास किया।

Jh vjfoUn ?kks"k

श्री अरविन्द का जन्म कलकत्ता में हुआ। सात वर्ष की आयु में इन्गलैन्ड भेजा गया। 1890 में आई0सी0एस0 की लिखित परीक्षा में सफल हुऐ। परन्तु घुड़सवारी की परीक्षा उत्तीर्ण न कर सके। 1893 को भारत लौट कर भारतीय भाषाओं का अध्ययन किया तथा स्वतन्त्रता संग्राम में भी उनकी सक्रिय भूमिका रही।

अपने समाचार पत्रों बन्देमातरम, रकर्मयोगिन तथा धर्म द्वारा उन्होंने राष्ट्रीय भावना जागृत की वह जेल भी गये। अली पुर जेल में उन्हें ईश्वरीय आत्मा के दर्शन हुए, जिसके पश्चात उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन का त्याग किया और आध्यात्मिक जीवन व्यतीत किया।

thou n'kZu& श्री अरविन्द के अनुसार सृष्टि की रचना परम चेतना (Supreme Consciousness) की प्राप्ति के लिए भी गई है।

1. पदार्थ, प्राण, मन व बुद्धि इनका अस्तित्व पृथक नहीं है। प्रत्येक अनुवर्ती स्तर अपने पूर्ववर्ती स्तर से जुड़ा है।
2. द्वितीय विशेषता उच्च स्तर पर पहुंच कर विकसित चेतना अपने पूर्ववर्ती व अनुवर्ती स्तरों को अपने नियमों के अनुरूप प्रभावित करती है।

'kSf{kd n'kZu& अरविन्द के अनुसार शिक्षा शास्त्री का उपकरण, अन्तःकरण है जिसके चार प्रमुख स्तर हैं।

1. fpRr **(Citta)**- यह भूतकालीन मानसिक संस्कार व स्मृति का कोष है। इसे प्रशिक्षण की आवश्कयकता नहीं है।
2. okLrhod efLr"d vFkok ekul **(Manas)** & का प्रमुख कार्य, संवेदन की अनुभूति है। यह संवेदन ही विचारों का आधार है, स्वय विचार नहीं। इसलिए प्रत्येक शिक्षा शास्त्रों के लिये यह अतयन्त आवश्यक है कि वह बालक की छः इन्द्रियों के विकास की ओर विशेष ध्यान दे।
3. cf) **(Intellect)** – यह विचारों का वास्तविक उपकरण है जिसके द्वारा उन्य स्तरों द्वारा एकत्रित ज्ञान का प्रयोग किया जाता है। इसके कार्य को दो मुरख्य भागों में विभाजित किया गया है।

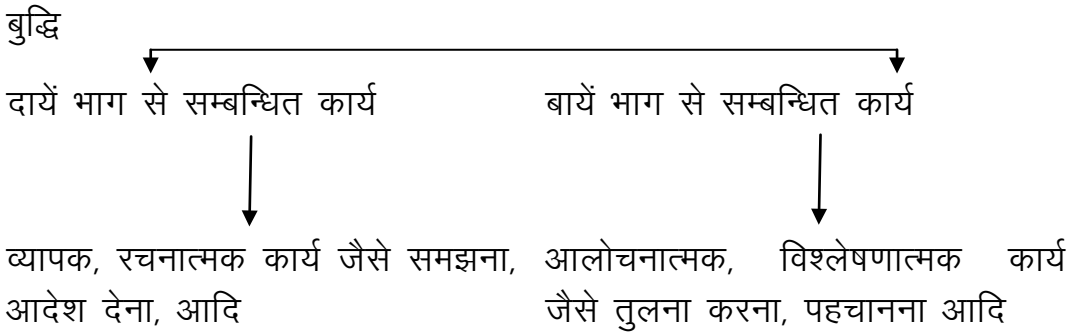

4. Kku (Faculty) – इस स्तर से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण शक्ति है। सत्य का अर्न्तज्ञान (intuitive perception of truth).

ufrdrk dk fodkl& श्री अरविन्द के अनुसार केवल धार्मिक पुस्तकों द्वारा नैतिक शिक्षा नहीं दी जा सकती। परन्तु यदि इनके विचारों को मनुष्य व्यावहारिक रूप से अपना ले तब यह उसके चरित्र को प्रभावित करती है। नैतिक विकास के लिए उन्होने तीन बातों को अत्यधिक महत्व दिया–

1. संवेग Emotions)
2. संस्कार (Formed habits and associations)
3. स्वभाव (Nature)

ufrd eu%fLFkfr **(Moral Temper) -**

बालकों को ब्राहमण से – त्याग की भावना

क्षत्रिय से – साहस

वैश्य से – उदारता

शूद्र से – सेवा भाव

की शिक्षा लेनी चाहिए तभी उसमें नैतिक मनःस्थिति का विकास संभव होगा।

lLdkjk dh 'kf) & के लिए उन्होंने राजयोग की संयम विधि का उल्लेख किया।

ikB~;Øe **(Curriculum)**

अरविन्द के अनुसार पाठ्यक्रम रोचक होना चाहिए। इसमें उन विषयों को स्थान दिया जाना चाहिए जिनसे बालक का आध्यात्मिक व बौद्धिक विकास हो। पाठ्यक्रम के विषयों में जीवन की क्रियाशीलता के गुण हों।

1. ikFkfed Lrj **(Primary Stage)** & पर मातृ–भाषा, अंग्रेजी, फ्रैंच साहित्य, राष्ट्रीय इतिहास, चित्रकला, सामान्य विज्ञान, सामाजिक अध्ययन व गणित के शिक्षण को उन्होंने महत्व दिया।
2. ek/;fed Lrj **(Secondary Stage)** & पर मातृ–भाषा, अंग्रेजी, फ्रैंच, गणित, कला, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, स्वास्थ शिक्षा, सामाजिक विषय आदि की शिक्षा को महत्व दिया।
3. fo'ofo|ky; Lrj **(University Stage)** & भारतीय व पाश्चात्य दर्शन, सभयता का इतिहास, अग्रेजी साहित्य, फ्रैंच साहित्य, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान तथा विश्व एको करण सम्बन्धी विषयों के ज्ञान को उन्होने आवश्यक समझा।
4. 0;kolkf;d f'k{kk **(Vocational Education)** & के अन्तर्गत चित्रकारी, शिल्प, कुटीर, उद्योग आदि विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाना याहिए।

f'k{k.k fl)kUr

1. शिक्षक द्वारा ज्ञान प्रदान नहीं किया जा सकता। वह बालक को स्वानुभव व स्वप्रयत्न द्वारा ज्ञान प्राप्ति का मार्ग दिखा सकता है।
2. श्री अरविन्द के अनुसार बालक की प्रकृति के अनुसार शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।
3. ज्ञात से अज्ञात की ओर (From near to far) के सिद्धान्त का भी उन्होंने समर्थन किया।
4. बालक को शिक्षा द्वारा स्वतन्त्र विकास का अवसर प्रदान करना चाहिए।

f'k{k.k fof/k

अरविन्द ने समकालिक व क्रमिक (Simultaneous and Successive) विधि को अत्यधिक महत्व दिया। उनके अनुसार बालक को क्रमिक व रोचक ढ़ग से किसी एक विषय की शिक्षा दी जानी चाहिए। जब तक वह उस विषय में प्रवीण नहीं हो जाता। यह ही सच्ची शिक्षण कला है।

> "To lead him on step by step, interesting and absorbing him in each as it comes, until he has mastered his subject is the true art of teaching".
>
> Aurobindo

उनके अनुसार बालक एक भाषा में प्रवीण हो जाये तब उसे अन्य भाषाओं का ज्ञान भी दिया जा सकता है।

f'k{kk dk ek/;ek& मातृ–भाषा हो।

bfrgkl dh f'k{kk& रोचक कहानियों के माध्यम से दी जानी चाहिए।

foKku dh f'k{kk& बालक में जिज्ञासा की भावना जागृत कर दी जा सकती है।

dyk dh f'k{kk& प्रदान करने के लिए बालक के अनुकरण के गुण का प्रयोग किया जा सकता है।

bfUnz;k dk if'k{k.k& शिक्षक का महत्वपूर्ण कर्तव्य है। श्री अरविन्द के अनुसार यदि इन्द्रियाँ किसी रोग से पीड़ित हो तो उनका उपचार होना चाहिए।

ukMh 'kq)h **(Nadi-Shuddhi)** – नाड़ियों में किसी भी प्रकार के अवरोध को दूर करने के लिये योग में श्वास नियन्त्रण की प्रक्रिया का सुझाव दिया गया है।

fp= 'kq)h **(Citta Shuddhi)** – चित्त में किसी प्रकार से अवरोध को भी योग द्वारा दूर करने का सुझाव दिया।

izd`frokn e fo'okl & श्री अरविन्द के अनुसार यदि हम प्रकृति को अपने ढंग से कार्य करने दे तभी हमें उसके अपहारों में लाभ हो सकता है।

"It is by allowing Nature to work that we get the benefit of the gifts she has bestowed on us". Aurobindo

f'k{kd dk LFkku& अरविन्द के अनुसार शिक्षा केवल पथ प्रर्दशक है। वह छात्र को सीखने की प्रक्रिया में सहायता व प्रेरण प्रदान करता है।

eY;kdu& प्रकृतिवादी व प्रयोजन वादियों की भांति बाल केन्द्रित शिक्षा पर श्री अरविन्द ने बल दिया परन्तु वास्तविकता यह है कि वह विशुद्ध आर्दशवादी थे। अनका शिक्षा दर्शन आध्यात्मिक आस्था, ब्रहम्चर्य तथा योग पर आधारित होते हुये भी आध्यात्मिक प्रगति का सूचक है।

Pondicherry e International University dh LFkkiuk&
इस संस्थान में उन्होंने शिक्षा को एक नवीन रूप प्रदान करने का प्रयास किया है।

johUnzukFk Bkdqj
रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म बंगाल के प्रसिद्ध ठाकुर वंश में कलकत्ते में हुआ। उनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर एक धर्मिक, सुधारक, ज्ञानी तथा सुसंस्कृत व्यक्ति थे।

nk'kfud fopkj o dk;& भारत की अतुलनीय कवि परम्परा में गुरूदेव रवीन्द्रनाथ एक ऐसे कवि हुये जिनके काव्य में प्राचीन ऋषियों की तेजीस्वता तथा वैष्णवों का आत्म निवेदन समन्वित रू‍प में प्रकट हुआ।

'गीतांजलि' की बंगला रचनाओं का अंग्रेज़ी अनुवाद किया तथा 'नोबेल पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

रवीन्द्रनाथ ने ब्रहम्समाज, उपनिषद, वैष्णव विचारधारा, बौद्ध व ईसाई धर्मों के विभिन्न पक्षों को अपनाया।

अद्धैत ब्रहयः– उनके अनुसार –अंह की मृत्यु परमपुरूष के प्रति भक्ति बन जाती है। उनका यह विचार विचारधारा विखरधारा से प्रभावित है अतः उनके दर्शन को वैष्णव अद्धैत भी कह सकते हैं।

vkRek d rhu :i

उपनिषद बहा के स्वरूप को तीन भागों में विभक्त करते हैं सत्य, ज्ञान, अनन्त। इस विचार से प्रभावित रवीन्द्रनाथ ने आत्मा के तीन रूप निश्चित किये हैं–

1. 'मैं हूँ अथवा मुझे अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये साधन की खोज करनी है।

2. मैं जानता हूं इस भाव के द्वारा मानव में जिज्ञासा उत्पन्न होती है।

3. मैं व्यक्त करता हूं इसे उन्होंने ब्रहय के अनन्तस्वरूप के अन्तर्गत माना है।

txr vkj ek;k& रवीन्द्रनाथ माया को सत् व असत् दोनों मानते हैं। उन्होने जगत को आत्मबोध का साधन माना है।

ie }kjk ijei:"k dh vuHkfr& 'साधना' में उन्होंने लिखा है ''प्रेम में विभिन्न अस्तित्व के अंतविरोध नष्ट हो जाते हैं। प्रेम में द्धैत और अद्धैत में विरोध नहीं रहता''।

f'k{kk dk vFk& उन्होंने अपनी पुस्तक पर्सनालिटी में लिखा है कि ''उच्चतम शिक्षा वह है जो हमारे जीवन को सभी अस्तित्वों के साथ संगतिपूर्ण बनाती है।''

> "The highest education is that which makes one's life in harmony with all existence". Tagore.
>
> रवीन्द्रनाथ के अनुसार जीवन की परिस्थितियों में ज्ञान प्राप्त करना ही शिक्षा है।
>
> ''सच्ची शिक्षा तो संग्रहित सामग्री के सही प्रयोग में उसकी वास्तविक प्रकृति को जानने में और उसे जीवन के साथ वास्तविक जीवन रक्षा के रूप में निर्माण करने में होती है।''
>
> "True education consists in knowing the use of any use full material that has been collected, to know its nature and to build along with life a real shelter for life." -Tagore.

रवीन्द्रनाथ ने सदा ही पाश्चात्य प्रतिभा की आवश्यकता को अनुभव किया है जिसके फलस्वरूप वह अपने शैक्षिक आदर्शों को एक व्यावहरिक रूप प्रदान कर सके।

f'k{kk d mÌ’;

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार ‘‘शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को सत्य से परिचित कराना है’’।

रचनात्मक शक्ति का उदय भी उनके अनुसार शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

प्राकृति व शांत वातावरण में बालक को जीवनानुभवों को संचित करने में सहायता भी शिक्षा द्वारा दी जा सकती है।

पूर्व तथा पश्चिम के ज्ञान तथा व्यावहारिकता में समनवय सथापित करना शिक्षा का एक महान उद्दश्य है।

सहयोगात्मक व रचनात्मक क्रियाओं द्वारा व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना भी रवीन्द्रनाथ के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य है।

पूर्ण रूप से स्वतन्त्र वातावरण में बालक का शरीरिक तथा मानसिक विकास शिक्षा के माध्यम से सम्भव है।

ikB;Øe& रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने किसी निश्चित पाठ्यक्रम की योजना प्रस्तुत नहीं की है। उनके विचारों में पाठ्यक्रम लचीला तथा बालक की रूचि के अनुसार होना चाहिए। उन्होने सांस्कृतिक व सृजनात्मक विषयों जैसे इतिहास, भूगोल, विज्ञान, साहित्य, प्राकृतिक अध्ययन, आभिनय, भ्रमण, ड्राइन्ग, संगीत, नृत्य की शिक्षा को महत्व दिया।

iLrdh; Kku dk fojk/k& रुसों की भांति उन्होने भी पुस्तकीय ज्ञान को विशेष महत्व नहीं दिया। परन्तु ‘Robinson Crusoe’ ही एक मात्र पुस्तक थी जिसे उन्होने शिक्षण के उपयुक्त माना है।

f'k{kk dk ek/;e& मातृ भाषा हो। इस बात पर वह विशेष बल देते थे।

cky lkfgR;& रोचक एवं आर्कषक ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

श्री निकेतन में उन्होंने इस बात की व्यवस्था की कि किसान अपनी व्यवहारिक समस्याओं का समाधान कर सें।

dfork dh शिक्षा– रविन्द्रनाथ के अनुसार केवल कवि द्वारा ही कविता की सौन्दर्यानुभूति संभव है। उनके अनुसार जो व्यक्ति साहित्य का ज्ञान प्रदान करता है वह कविता की शिक्षा नहीं दे सकता।

f'k{kk e lknxh dk egRo& उनके अनुसार भारत में शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध होनी चाहिए। महात्मा गांधी की भांति उन्होने भी शिक्षा में सादगी को महत्व दिया।

"To make the paraphrenalia of our Education so expensive that Education itself becomes difficult of attainment would be like squandering all one's money in buying money bags".

Rabindranath Tagore, the Centre of Indian Culture, Viswo Bharati Bookshop, 1951

f'k{k.k fof/k& स्वप्रयास व स्वचिंतन द्वारा सीखने पर बल रवीन्द्रनाथ ने मनोवैज्ञानिक विधियों का अपने शिक्षण संस्थान (शांति निकेतन) में प्रयोग किया है।

ikd`frd fof/k& उनके अनुसार प्राकृतिक विज्ञानों का अध्ययन प्रकृति का निरीक्षण करके किया जाये।

fØ;k }kjk lh[kus ij cy& शारीरिक क्रिया द्वारा मास्तिष्क भी प्रभावित होता है इसी कारण से संगीत व अभिनय को शिक्षा का अंग माना।

vuq'kklu& रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार

अनुशासन

बालक को किसी क्रिया में व्यस्त रखकर	उसे विचारों की स्वतन्त्रता प्रदान कर	कला में रूचि जागृत करके उसके मास्तिष्क व शरीर दोनों को अनुशासित किया जा सकता है।

f'k{kd Nk= lEcU/k& रवीन्द्रनाथ के अनुसार शिक्षक व छात्र के मध्य एक निकट सम्पर्क से छात्र प्रेरणा प्राप्त करता है।

f'k{kk esa ;ksxnku& पेस्टालोजी, फ्रोबेल व डीवी की भांति उन्होने अपने मौलिक विचारों का प्रयोग किया। यह प्रयोग उनकी शि क्षण संस्थायें– शांति निकेतन, विश्वभारती तथा श्री निकेतन में सफलता पूर्वक किये गये।

उन्होंने अपने मानवतावादी दृष्टिकोण के आधार पर विश्व बन्धुत्व का प्रयत्न किया। भारत की शिक्षा योजनायें सैडलर कमीशन (1917), बेसिक शिक्षा योजना (1937) मृदालियर कमीशन (1952) तथा समाज शिक्षा योजना (1948) रवीन्द्रनाथ के विचारों का रूप हैं।

अतः हम कह सकते है कि इन महान दार्शनिकों के विचार आज भी उतने ही सार्थक हैं जितने की यह अनेक वर्ष पूर्व थे।

lanHkZ xzUFk

1. **आरगांधी, पटेल : एक जीवन,**

2. **भारतन कुमारप्पा, संपादक फॉर पसिफिस्ट्स एम;के; द्वारा लिखित।गांधी , नवजीवन प्रकाशन हाउस, अहमदाबाद , भारत , १९४९ .**
3. **द स्टोरी ऑफ़ माय एक्सपेरिमेंट्स विथ ट्रुथ — एक आत्मकथा**
4. **महादेव देसाई अनाशक्तियोग : द गोस्पेल ऑफ़ सेल्फ्लेस एक्सन, या द गीता अकोर्डिंग तू गाँधी .नवजीवन प्रकाशन घर; अहमदाबाद (प्रथम संस्करण १९४६)**
5. **महात्मा गाँधी के संचित लेख (सी डब्लू एम् जी) विवाद (गाँधी सेवा)**
6. **लुईस फिशर, २००२ द एसेंसियल गाँधी में पुनः प्रकाशित : उनके जीवन, कार्यों और विचारों का संग्रह. (पुनर्मुद्रित संस्करण) पीपी.१०६-१०८**
7. **श्री अरविन्द - मेरी दृष्टि में (गूगल पुस्तक; लेखक - रामधारी सिंह दिनकर)**
8. Aurobindo, Sri (2006), Autobiographical Notes and Other Writings of Historical Interest, Sri Aurobindo Ashram Publication Department
9. Ayyub, A. S. (1980), Tagore's Quest, Papyrus
10. Chakraborty, S. K.; Bhattacharya, P. (2001), Leadership and Power: Ethical Explorations, Oxford University Press (published 16 August 2001), ISBN 978-0-19-565591-9
11. Das, Manoj (30 December 2007), "The great ideological split", The Hindu, retrieved 13 April 2014
12. Dasgupta, T. (1993), Social Thought of Rabindranath Tagore: A Historical Analysis, Abhinav Publications (published 1 October 1993), ISBN 978-81-7017-302-1
13. Datta, P. K. (2002), Rabindranath Tagore's The Home and the World: A Critical Companion (1st ed.), Permanent Black (published 1 December 2002), ISBN 978-81-7824-046-6
14. Dutta, K.; Robinson, A. (1995), Rabindranath Tagore: The Myriad-Minded Man, Saint Martin's Press (published December 1995), ISBN 978-0-312-14030-4
15. Iyengar, K. R. Srinivasa (1985) Sri Aurobindo: a biography and a history. Sri Aurobindo International Centre of Education. (2 volumes, 1945) – written in a hagiographical style
16. Kripalani, K. (2005), Tagore—A Life, National Book Trust of India, ISBN 978-81-237-1959-7
17. Mehrotra, Arvind Krishna (2003). A History of Indian Literature in English. Columbia University Press. ISBN 978-0-23112-810-0.
18. Mishra, Manoj Kumar (2004). Young Aurobindo's Vision: The Viziers of Bassora. Bareilly: Prakash Book Depot.
19. Satprem (1968). Sri Aurobindo, or the Adventure of Consciousness. Pondicherry, India: Sri Aurobindo Ashram Press.
20. Sigi, R. (2006), Gurudev Rabindranath Tagore—A Biography, Diamond Books (published 1 October 2006), ISBN 978-81-89182-90-8

21. Singh, Ramdhari (2008). Sri Aurobindo: Meri Drishti Mein. New Delhi: Lokbharti Prakashan.
22. Van Vrekhem, Georges (1999). Beyond Man – The Life and Work of Sri Aurobindo and The Mother. New Delhi: HarperCollins. ISBN 81-7223-327-2.
23. Yadav, Saryug (2007), "Sri Aurobindo's Life, Mind and Art", in Barbuddhe, Satish, Indian Literature in English: Critical Views, Sarup and Sons